विषय-क्रम

1. **विषय प्रवेश** 1—14

प्रस्तुत विषय से संबद्ध पूर्ववर्ती प्रयास-आकलन-मूल्यांकन।
काव्य-पक्ष का महत्व, दर्शन, सैद्धांतिक विवेचन।
कलापक्षीय अनुशीलन—रूप-योजना, अभिव्यंजना-पक्ष, शिल्प, शैली।
नवप्रयास की आवश्यकता, शोध-विषय का स्वरूप और उसका स्पष्टीकरण।

2. **छायावादी काव्य : परिवेश और परंपरागत साहित्यिक चेतना, महादेवी जी की काव्यकृतियों का विहंगावलोकन** 15—55

पुनरुत्थानवादी आन्दोलन की पृष्ठभूमि, पूंजीवाद का आगमन, आत्माभिव्यंजनपरक रचनाओं की ओर प्रवृत्ति, स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति का उदय, उदय और विकास में योग देने वाले रचनाकार, स्वच्छन्दतावाद का दूसरा चरण (छायावाद) - संज्ञा - किसने, कब, किस अर्थ में।
छायावाद की सामान्य विशेषताएँ - लौकिक और अलौकिक भूमिकाएँ। अलौकिक भूमिका की कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा। महादेवी की विशिष्ट काव्य-चेतना।

नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा तथा अन्य संकलनात्मक काव्यकृतियों का विहंगावलोकन।

3. **महादेवी जी की काव्यकृतियों का वस्तुपक्ष** 56—86

(क) विविध भावात्मक भूमियाँ :

(1) जीवन और संसार के संपर्क से उद्भूत वैयक्तिक अपरितोष, अवसाद, नश्वरता, नैराश्य तथा 'इस पार' की विरागपरक भावनाएँ।

(2) 'उस पार' के भव्य पक्ष की कल्पनाएँ।

(3) अज्ञात सत्ता की मधुर स्मृतियाँ।

(4) वियोग और तज्जन्य वेदना के विभिन्न रूप

(ख) महादेवी-काव्य की वैचारिक भूमियाँ :

(1) 'उस पार' जाने का वेदनावादी मार्ग

(2) वेदना के दो रूप : (अ) समष्टि-आलम्बनक (आ) अज्ञात प्रियतम-आलम्बनक

(3) हृदय के परिष्कार और बुद्धि के विकास के विभिन्न रूप।

4. महादेवी-काव्य का केन्द्रीय भाव—वेदना और विश्लेषण 87—117

(क) प्रस्तुत वेदना सुखातिरेक की प्रतिक्रिया।

(ख) अतृप्त लौकिक राग की व्याज अभिव्यक्ति।

(ग) अतृप्त लौकिक राग का उन्नयन।

(घ) काव्यगत वेदना की भूमि आध्यात्मिक है।

(ङ) नारी-चेतना की युगानुरूप अभिव्यक्ति का सहज उच्छलन।

(च) अन्य संभावित व्याख्याएँ तथा स्वकीय मत।

5. रहस्यवाद का स्वरूप : उद्भव और विकास 118—150

विकास के तीन सोपान : औपनिषद्, मध्यकालीन और आधुनिक।

आधुनिक काव्यगत रहस्यवाद संबंधी मान्यताएँ।

आधुनिक रहस्यवाद के विभिन्न सोपान :

(1) जिज्ञासात्मक स्तर।

(2) प्रकृति-सुन्दरी पर चेतना का आरोप।

(3) अज्ञात सत्ता के प्रति समर्पण-भाव।

महादेवी की रहस्यवाद-संबंधी मान्यताएँ : लौकिक और अलौकिक भूमिका।

महादेवी-काव्य में प्रतिफलित रहस्यवादी मनोवृत्ति के विभिन्न सोपान।

सैद्धांतिक घोषणा और प्रायोगिक काव्यों में उसका (रहस्यवादिता का) स्वरूप, दोनों का पारस्परिक संबंध और समन्वय-निरूपण, अन्यान्य आलोचकों के अभिमत।

6. शिल्प या प्रगीत-शिल्प का अनुशीलन 151—171

प्रगीत—काव्यानुभूति—प्रगीतोपयोगी अनुभूति—तथाविध अनुभूति का मनोविज्ञानसम्मत स्वरूप-विश्लेषण।

महादेवी के प्रगीतों में अचेतन का उच्छ्वास—आत्मोन्मीलन—स्नायविक उन्मुक्ति की दशा।

प्रगीत की विशेषताएँ : लघुता, निजीपन, काव्यगत निजीपन का आशय, संक्षेप तथा गेयता ।

महादेवी के प्रगीतों में इन तत्वों का संयोजन ।

महादेवी के प्रगीतों में विभिन्न बंदों का केन्द्रीय भावानुरूप संयोजन-शिल्प ।

महादेवी जी के प्रगीतों का वस्तुगत वर्गीकरण-दार्शनिक रहस्यप्रगीत, प्रेममूलक रहस्यप्रतीत, प्रतीकवादी तथा प्रकृतिमूलक प्रगीत ।

7. **रूप-योजना** 172—206

(1) प्रस्तुत एवं अप्रस्तुत रूप-योजना ।

(2) अप्रस्तुत-योजना में प्रभावसाम्य का परीक्षण ।

(3) बिंब-योजना -- बिंबों के विविध रूप, महादेवी जी के काव्य में बिंब-विधान ।

(4) प्रतीक-नियोजन । महादेवी-काव्य में प्रतीक- योजना ।

8. **अभिव्यंजना-पक्ष (रूपयोजनेतर सौंदर्यव्यंजक उपकरण)** 207—239

नाद-सौंदर्य या नादानुरूप वर्ण-योजना ।

विविध शब्द एवं अर्थगत पूर्वी एवं पश्चिमी अलंकार, छन्द-योजना, दोषराहित्य का परीक्षण, शब्द-शक्तियों का सौंदर्य ।

9. **शैली** 240—259

व्यक्तित्व के विभिन्न पक्ष और शैली, शारीरिक पक्ष और शैली, बौद्धिक पक्ष और शैली, भावात्मक पक्ष और शैली, चारित्रिक पक्ष और शैली । महादेवी जी की काव्य-भाषा-शब्द-चयन, अंग्रेजी प्रभाव, बंगला का प्रभाव, स्वतंत्र शब्द-निर्माण, व्याकरणिक भूलें, गुण, वृत्ति, रीति, मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग ।

10. **महादेवी की काव्यकला-संबंधी सैद्धांतिक स्थापनाएँ** 260—282

महादेवी की काव्य भूमिकाओं में विवेचित उनकी काव्यकला संबंधी सैद्धांतिक स्थापनाएँ तथा उनका परीक्षण—सर्जनात्मक पक्ष, अभिव्यंजन पक्ष, ग्रहण-पक्ष ।

काव्य की लौकिक और अलौकिक भूमिका, छायावाद, यथार्थ, आदर्श एवं सामयिक समस्याएँ ।

11. **काव्य और दर्शन** 283—308

काव्य और दर्शन का संबंध, काव्य में दार्शनिकता का स्थान और आवश्यकता । महादेवी जी की विभिन्न कृतियों में उपलब्ध दार्शनिक सामग्री का पारमार्थिक और व्यावहारिक भूमिका पर विचार :

पारमार्थिक पक्ष - परतत्व का स्वरूप, सृष्टि-प्रक्रिया, सृष्टि का स्वरूप, जीवभाव, मूलरूप से मिलने की आकांक्षा, साधना का पथ और अन्तिम गन्तव्य ।

व्यावहारिक पक्ष—लोकमांगलिक दृष्टि, लोक-मंगलकारी साधनों पर विचार और जीवन में उनका उपयोग ।

12. छायावादी कवियों की दार्शनिक चेतना 309—334

छायावादी कवियों की दार्शनिक चेतना—पारमार्थिक और व्यावहारिक । श्री जयशंकर प्रसाद, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', श्री सुमित्रानन्दन पन्त । महादेवी जी की दार्शनिक चेतना का तुलनात्मक वैशिष्ट्य ।

13. छायावादी कवियों के वस्तु और कलापक्षीय विशेषताओं के संदर्भ में महादेवी 335—360

श्री जयशंकर प्रसाद, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', श्री सुमित्रानन्दन पन्त, श्रीमती महादेवी वर्मा ।

महादेवी और प्रसाद, महादेवी और निराला, महादेवी और पन्त ।

14. उपसंहार 361—365

परिशिष्ट 366—372